MP Board Class 6th Notes Sanskrit Chapter 20 श्रमस्य महत्वम्

श्रमस्य महत्वम् हिन्दी अनुवाद

"श्रम एव जयति" इति अस्माकं ध्येयवाक्यम् अस्ति। श्रमेण
राष्ट्रस्य उन्नतिः भवति। श्रमेण अर्जितं धनं श्रेष्ठं भवति।
सिक्खधर्मस्यप्रवर्तकः गुरुनानकदेवः पञ्जाबप्रान्ते अभवत्।
एकदा सः धर्मप्रचारार्थं एकं ग्रामम् अगच्छत्। तत्र एकः
श्रमिकः गुरुं दृष्ट्वा स्वागतम् अकरोत् एवं च भोजनार्थं
रोटिकाः समर्पयत्। एकः उच्चवर्गीयः धनिकः अपि गुरवे
मिष्टान्नंअयच्छत्। नानकः किञ्चित् विचार्य श्रमिकस्यरोटिकाः स्वीकृतवान्। एतत् दृष्ट्वा धनिकः सक्रोधम्
अवदत्"महाराज! किमेतत् ? मम गृहात् आनीतं सरसभोजनं त्यक्त्वा भवान् श्रमिकस्य शुष्करोटिकाः स्वीकरोति।
एतत् समीचीनं नास्ति। अहं प्रतिष्ठितः अस्मि। भवान् मम अपमानम् अकरोत्। किं मयि गुरुकृपा नास्ति? माम् अपि
गौरवान्वितं करोतु।"

अनुवाद :
"परिश्रम ही विजय प्राप्त करता है।" यह हमारा ध्येय वाक्य है। परिश्रम से राष्ट्र की उन्नति होती है। श्रम से कमाया धन श्रेष्ठ होता है। सिक्ख पन्थ के प्रवर्तक गुरुनानक देव पंजाब प्रान्त में हुए थे। एक बार वे धर्म के प्रचार के लिए एक गाँव को गये। वहाँ एक श्रमिक (मजदूर) ने गुरु को देखकर स्वागत किया और भोजन के लिए रोटियाँ समर्पित कर दीं। एक उच्च वर्ग के धनवान ने भी गुरुजी को मिष्ठान (मीठे पकवान या मिठाइयाँ) दी। नानक ने कुछ विचार करके श्रमिक की रोटियों को स्वीकार कर लिया। इसे देखकर धनवान व्यक्ति क्रोधपूर्वक बोला-"महाराज! यह क्या है? मेरे घर से लाये गये सरस भोजन (स्वादिष्ट भोजन) को त्यागकर आपने श्रमिक की सूखी रोटियाँ स्वीकार की हैं। यह उचित नहीं है। मैं प्रतिष्ठावान् हूँ। आपने मेरा अपमान किया। क्या मुझ पर गुरु की कृपा नहीं है? मुझे भी गौरवान्वित कीजिए।"

गुरुनानकः क्षणं विचार्य मधुरवाण्या अवदत्-"संसारे जात्या, धनेन च न कोऽपि जन: उच्चः निम्नो वा। सर्वेजनाः समानाः। चरित्रेण एव श्रेष्ठता भवति। श्रमिकेण तु बहुश्रमेण धनं अर्जितम्। अतः तस्य भोजनं पवित्रम् अस्ति। अहं तस्य भोजनं स्वीकृतवान्। गुरुवाणीं श्रुत्वा प्रभावितः धनिकः अभिमानं त्यक्त्वा विनम्रः भूत्वा गुरुचरणयोः भूमौ अपतत्। उक्तं च "श्रमेण उपार्जिता लक्ष्मी: शुद्धा भवति।"

अनुवाद :
गुरुनानक क्षण भर विचार करके मधुर वाणी में बोले-"संसार में जाति से और धन से कोई भी व्यक्ति ऊँचा अथवा नीचा नहीं होता है। सभी लोग समान ही होते हैं। चरित्र से श्रेष्ठता होती है। श्रमिक ने बहुत परिश्रम से धन कमाया है। इसलिए उसका भोजन पवित्र है। मैंने उसका भोजन स्वीकार कर लिया। गुरु की वाणी को सुनकर प्रभावित हुआ धनवान अभिमान का त्याग करके विनम्र होकर गुरु के चरणों में जमीन पर गिर गया और कहा "परिश्रम से उपार्जित लक्ष्मी शुद्ध होती है।"

श्रमस्य महत्वम् शब्दार्थाः।

प्रवर्तक = चलाने वाले। विचार्य = विचार करके। श्रमिकः = मेहनत करने वाला, मजदूर। अयच्छत् = दिया। गौरवान्वितम् = धन्य।

https://www.evidyarthi.in/